[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3589
INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

"भारत में ग्राफिक्स कला में रंगों का उपयोग"

रीना गौतम (शोधार्थी),
ग्राफिक्स विभाग, इंदिरा कला संगीत विश्व विद्यालय, खैरागढ़, (छत्तीसगढ़)
Email: reenagautamartist@gmail.com

उद्देश्यः

- छापाचित्रण की उत्पत्ति एवं विकास
- छापाचित्रण का भारत में इतिहास एवं विकास
- भारत में रंगीन छापाचित्रण की शुरुआत
- छापाचित्रण में रंगों का समाज पर प्रभाव
- छापाचित्रों की ललित कला में मान्यता

यह एक विदेशी कला है जो यूरोप आदि से भारत में आई . " मशीनी छपाई का परिचय भारत में 16वीं शताब्दी के मध्य हुआ। '' ;1द्ध

छापा चित्रकला का इतिहास :

छापाकला की उत्पत्ति मोहन जोदड़ों से प्राप्त मोहरों से मानी जा सकती है। मोहन जोदड़ो की सभ्यता में एवं आदि सभ्यताओं में रेशमी और सूती वस्त्रों के प्रयोग एवं उन पर छापों के प्रमाण भी मिले हैं अतः लकड़ी के ठप्पों के छापों को छापाकला का प्रारम्भिक रूप मान सकते हैं।

भारत में रंगीन छापा चित्रण :

भारत में अत्यधिक मात्रा में छापाचित्रों का निर्माण किया गया और अनेकों कलाकारों जिनमें विलियम और डेनियल ने छापा कला की भारत में संभावनाओं को टटोला और दोनों कलाकारों ने 1786–88 के मध्य ' कलकत्ता के बारह दृश्य' नामक मूल अम्लांकन रंगीन छापाचित्रों का निर्माण किया जिनमें चित्रों को एक रंग में छापा गया और उनको रंगीन स्याही से रंगदार बनाया गया। ;9द्ध छापाकला की इस गतिविधि के बाद देश में अनेकों जगह रंगीन छापाचित्रों का निर्माण किया जाने लगा जिनमें कलकत्ता केंद्र था । इस प्रकार रंगीन विज्ञापन छापाचित्रों का भी निर्माण भी शुरू हो गया ।

ग्राफिक कला में रंगो के उपयोग की बात करें तो जब तक विज्ञापन रंगीन नहीं होता उसका आकर्षण मंद ही रहता है । विज्ञापन जब तक दर्शक को आकर्षित न करे या उसके मन मस्तिष्क पर प्रभाव न डाले वह उद्देश्यहीन ही रहता है "स्टार्च ने अपने रंग पर किये गए सर्वेक्षण से यह सिद्ध किया है कि विज्ञापन में प्रकाशित करवाए गए रंगीन चित्र श्वेत– श्याम चित्रों की तुलना में १० गुना अधिक ध्यानआकर्षित करती हैं ।" ;10द्ध काले सफेद एवं रंगीन विज्ञापनों पर किए गए ४ अलग अलग अध्यनों में लूसियेन वार्नर तथा रेमंड फ्रेजन ने पाया की रंगीन विज्ञापन अत्यधिक प्रभावशाली होते हैं . उदाहरण के लिए कपड़े , दावा तथा रिकार्ड के चार रंगों वाले तथा काले सफेद विज्ञापनों के ध्यान आकर्षण छमताओं का अनुपात क्रमशः 22.4:11.6, 45.2:20.3,तथा 17.4:23 था । ;11द्ध इन सभी तथ्यों के निष्कार्शानुसार कहा जा सकता है की विज्ञापन कला (छापा कला) में रंगों का विशिष्ट स्थान है ।

विज्ञापन कला से हट कर जब हम छापाकला के ललित कला के अंतर्गत अन्य विधियों जिनमें वुड कट , लीनो कट अम्लांकन , लिथोग्राफी , सेरीग्राफी ,प्लेटोग्राफी , कोलोग्राफी ,विस्कोसिटी ,मोनोप्रिंट / मास्टर प्रिंट / यूनिक प्रिंट आदि की विवेचना करें तो ललित कला का एक अंग होने के कारण एक चित्र निर्माण की द्विआयामी विधि है . कुछ कलाकार चित्रों को व्याकरण और छापाकला को तकनिकी कोष कहते हैं , कहने का आशय यह है की छापाकला चित्रों को बनाने की एक तकनिकी विधि है इस तरह छापा कला चित्रों पर भी षडंग के नियम लागू होते हैं और छापा चित्र भी षडंग के छ अंगो के पूर्ण होने पर ही पूर्ण माना जाता है . और षडंग में रंग / वर्ण छठा महत्वपूर्ण अंग माना जाता है ।

यदि छापा कला की विधियों की बात करें तो छापा चित्रण हेतु ब्लॉक किसी भी माध्यम में बना लिए जाएँ चाहे वह धातु की प्लेट , कागजों को चिपका के कोलोग्राफ प्लेट , सिल्कस्क्रीन हेतु स्क्रीन का निर्माण, लिथोग्राफी हेतु लिथो /चूना पत्थर अथवा लीनो और काष्ठ को उत्कीर्ण किया जाये आखिरकार ब्लॉक से इंक/स्याही /रंग को ही कागज और अन्य माध्यमो पर छापते हैं (ब्लाइंड प्रिंट , पेपर पल्प , इम्बोस्ड छापा चित्रों को छोड़ कर) इन विधियों में विस्कोसिटी ऐसी विधि है जो स्याही की

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

चिपचिपाहट पर आधारित है स्याही के इसी गुण द्वारा ही छापाचित्र बनाये जाते हैं । इस विधि में छापाचित्र तैयार करने के लिए ब्लॉक/प्लेट पर विभिन्न गहराइयों की सतह बनाई जाती है तथा विभिन्न प्रवृत्ति के रबर के रोलरों जिनमे मुख्यतः हार्ड रोलर ,मध्यम रोलर और अति स्पंजी/साफ्ट रोलरों द्वारा प्लेट की विभिन्न परतों पर स्याही लगाये जाती है और प्रिंटिंग प्रेस के माध्यम से पेपर पर छापा प्राप्त किए जाते हैं । सेरीग्राफी में भी स्क्रीन पर स्टेंसिल की सहायता से स्कूजी से स्याही खींच कर पेपर या अन्य माध्यमों पर चित्र प्राप्त किए जाते हैं । समकालीन भारतीय छापाचित्रकारों में अनुपम सूद , ज्योति भट्ट , कृष्णा रेड्डी , दिव्यानी कृष्णा , कँवल कृष्णा , कविता नायर , वी . नागदास , अदि छापाकार आते हैं।

निष्कर्श :

- छापाचित्रण के विकास ने ही विश्व की सभ्यताओं , भाषाओं , एवं धर्मो को एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र तक पहुचने एवं प्रचार प्रसार में सहायता की।
- छापाचित्रण /मुद्रण ने ही भारत में समाज के निचले एवं मध्य स्तर के लोगो तक शिक्षा को सुगम बनाया ।
- रंगीन छापाचित्रों ने विज्ञापन जगत में श्याम श्वेत विज्ञापनों की अपेक्षा अधिक ध्यान आकर्षित कर विज्ञापन कला को भी बढाया ।
- छापाचित्र कला में एडिशन विधि ने छापाचित्रों को ललित कला के अंतर्गत स्थान दिया ।
- द्विआयामी होने के कारण छापा चित्रण चित्रों की अन्य विधियों की भांति ही षडंग के नियमो का पालन करती है और वर्ण प्राविधि पर आधारित है ।

चित्र

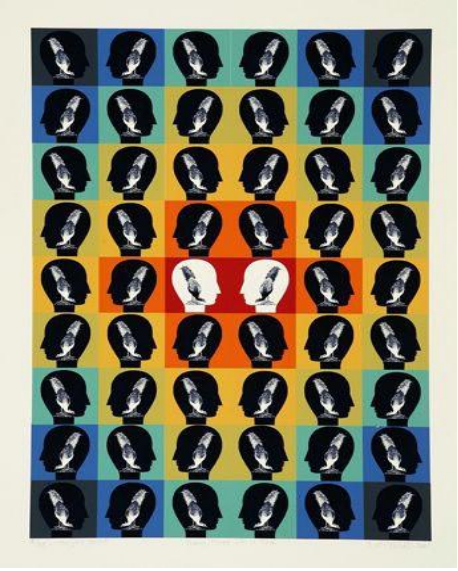

(चित्र–5) ज्योति भट्ट छापाचित्र

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. *भारतीय छापाकला आदि से आधुनिक काल तक, कुमार, सुनील,* Pg.49
2. *छापाकला का इतिहास आदि से आधुनिक काल तक, कुमार डा0 सुनील,* Pg.32
3. *विज्ञापन कला, हटवाल. एकेश्वर. प्रसाद,* Pg.49
4. *विज्ञापन कला, हटवाल. एकेश्वर. प्रसाद,* Pg.49,50